उपयोगकर्ता के लिए मैत्रीपूर्ण सी.सी.ई.

शोभना मालिनी वर्गीज

हमारे विशाल देश के सभी स्कूलों में परीक्षा सुधार के अंग के रूप में सतत व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) की शुरुआत के कारण सभी शिक्षक 'रचनात्मक' व 'योगात्मक' जैसे शब्दों का प्रयोग बड़े आराम से करने लगे हैं और इस प्रकार सी.सी.ई. को पेशेवर रूप मिल गया है। यह स्वागत का विषय है क्योंकि ये हमारे शिक्षक ही हैं जो देश के दूर-दराज जिलों में इस पहल को परिचालित करते हैं। इसका कारण यह है कि अनेक राज्य की सरकारें अपने-अपने शिक्षा विभाग के जिले, खण्ड व संकुल स्तर के पदाधिकारियों, मुख्य अध्यापकों, अध्यापकों ....यानि कि इससे सम्बन्धित हर व्यक्ति को इस बारे में प्रशिक्षित करने के लिए प्रयत्नशील हैं! यहाँ तक कि विद्यार्थी भी इसके बारे में जागरूक हो गए हैं।

केवल अंकों को पाने की आत्म-घातक दौड़ और प्रतियोगिता से बच्चों को छुटकारा दिलाने के लिए जब सी.सी.ई.के बारे में सोचा गया तो उसकी कार्यनीति को बनाने के लिए कम से कम एक दशक तक अनेक सम्मेलन, सभाओं, समितियों एवं आयोगों का गठन किया गया। पहली नजर में यह पहल उचित लगी और इसने मेरे उत्साह को काफी बढ़ा दिया।

लेकिन जब इस प्रणाली की जटिलता के बारे में और अधिक जाना और बात कुछ और साफ हुई तो मेरा उत्साह एकदम ठण्डा पड़ गया। लेकिन निरुत्साह की इसी भावना ने मुझे मजबूर किया कि मैं सी.सी.ई. की वास्तविकता की जाँच करूँ। आगे दो विचार प्रस्तुत किए गए हैं-पहले में यह बताया गया है कि सी.सी.ई. को नई बोतल में पुरानी शराब क्यों कहा जा सकता है और दूसरा कुछ ऐसे व्यावहारिक तरीकों पर चर्चा करता है जिनकी सहायता से यह और अधिक कारगर हो सकता है। तो ये विचार प्रस्तुत हैं-

अवधारणात्मक रूप से, सी.सी.ई. की कल्पना इस रूप में की गई है कि यह भारतीय स्कूलों में 'प्रेशर कुकर' के लक्षण को खत्म करने में सहायक होगा और परिणामस्वरूप विद्यार्थियों के अधिगम की गुणवत्ता को न्यायपूर्ण और संगत तरीके से निर्णीत किया जा सकेगा। चक्रीय टेस्ट एवं परीक्षाओं के परे जाकर शिक्षकों को यह जिम्मेदारी दी गई है कि वे अपने विद्यार्थियों की उपलब्धियों को क्रमिक लघु (और अतिलघु), औपचारिक और अनौपचारिक 'रचनात्मक' आकलन के साथ-साथ हर सत्र के अन्त में औपचारिक 'योगात्मक' मूल्यांकन के माध्यम से सतत रूप से आँकें। यह एक राष्ट्रीय सपना था कि चक्रीय इकाई टेस्टों तथा हर शैक्षिक वर्ष के अन्त में होने वाली भयावह अन्तिम परीक्षा को हटा दिया जाए जो बच्चों को अपनी शैशवावस्था से निकलते ही भयंकर कष्ट पहुँचाती थीं। यहाँ तक तो सब ठीक था!

लेकिन सी.सी.ई. के विवरणों और व्याख्यायित करने के तरीकों में मौजूद भयानक गलतियों के कारण उन्हें जिस तरह से लागू किया गया, वह उसके विजन को पूरा नहीं कर पाता है। एक तरफ तो लगातार विद्यार्थियों की अनौपचारिक परीक्षा ली जाती है, जिन्हें अकसर अघोषित कक्षा-टेस्ट के रूप में लिया जाता है और जो सामान्य रूप से 10 अंक या 5 या कभी-कभी तो 1 अंक के भी होते हैं और अगर वे अच्छा प्रदर्शन करना चाहें तो उन्हें हमेशा पूरी तरह से तैयार रहना पड़ता है। दूसरी ओर, शिक्षकों को पाठ्यक्रम के हर विषय और सह-पाठ्यक्रम के क्षेत्र में लगातार छोटे-छोटे रचनात्मक आकलन करते रहने पड़ते हैं जो कि इस नवीन सतत व्यापक मूल्यांकन की प्रकृति को सन्तुष्ट करने के लिए जरूरी हैं। और हाँ, शिक्षकों से की जाने वाली इस अपेक्षा को नहीं भूलना चाहिए कि उन्हें प्रतिदिन अपने विद्यार्थियों के अधिगम का आकलन करना होता है और उसके

लिए ग्रेड भी देने होते हैं। इस अनौपचारिक क्षेत्र में जब शिष्ट रूप से एक तहकीकात की गई तो पता चला कि शिक्षक इस प्रणाली को कैसे धता बताते हैं। उनका तरीका कुछ इस तरह का था-विद्यार्थी असंख्य औपचारिक टेस्टों में जो अंक प्राप्त करते हैं उसके आधार पर, एक आम समझ के साथ, शिक्षक उन्हें मनमाने ढंग से ग्रेड दे दिया करते थे।

लेकिन बोझ ज्यों का त्यों बना हुआ है और बच्चों को महसूस होता है कि वे "फुटबाल के मैदान में एक चींटी की तरह" हैं, जैसा कि एक अँग्रेज लड़की ने कुछ साल पहले कहा था और यह कथन बड़ा प्रसिद्ध हुआ! इसलिए प्रणालीगत प्रेशर कुकर अभी भी जोर से चीख रहा है!

मेरे विचार से विद्यार्थियों के काम का पता लगाने के काम को चाहे चक्रीय रूप से किया जाए या सतत रूप से, सी.सी.ई. उपयोगकर्ता के लिए मैत्रीपूर्ण तभी हो पाएगा जब उसे उन अपेक्षित अधिगम उद्देश्यों एवं परिणामों की व्यवस्थित योजनाओं के साथ सन्दर्भित किया जाए जो कक्षा के कार्यकलापों का मार्गदर्शन करें। जब इस बात के बारे में स्पष्ट धारणा बनेगी कि पाठ को पढ़ाने के बाद विद्यार्थियों की अवधारणात्मक समझ और कौशल के विकास में हम क्या पता लगाना चाहते हैं, तभी अधिगम की गुणवत्ता को सहायक और सतत रूप में आँका जा सकेगा। लेख के बाकी हिस्से में उपयोगकर्ता के लिए कुछ मैत्रीपूर्ण युक्तियों के बारे में बताया जाएगा जो सी.सी.ई. की प्रभावशीलता को बढ़ाने में काफी सहायक सिद्ध होंगी।

सी.सी.ई. से उपयोगकर्ता की मित्रता बढ़ाने के लिए एक सुविधाजनक प्रारम्भिक बिन्दु इस बात को स्पष्ट करना है कि ये शब्द क्या बताते हैं-'आकलन', 'मूल्यांकन', 'रचनात्मक' एवं 'योगात्मक'। आकलन (असेसमेंट) शब्द लैटिन शब्द 'assedere' से निकला है जिसका मतलब है "बगल में बैठना और उच्च उपलब्धि के लिए शिक्षा देना"। जबकि मूल्यांकन का मतलब है ध्यानपूर्वक परीक्षण के बाद किसी चीज का मूल्य नियत करना। रचनात्मक का मतलब आमतौर पर यह होता है कि सम्पूर्णता में महारत हासिल करने की ओर बढ़ते समय भी अधिगम के प्रत्येक भाग का विकास। जबकि योगात्मक का अर्थ पूर्ण अधिगम की समाप्ति के बाद एक कुल, व्यापक और संचयी निर्णयात्मक सारांश से लिया जाता है। जब वास्तविक रचनात्मक आकलन को स्कूलों और कक्षा में होने वाले अधिगम पर लागू किया जाता है तो यह उद्देश्यपूर्ण रूप से नियोजित पाठों का परिणाम होता है जो स्पष्ट रूप से अधिगम के लक्ष्य या अपेक्षित अधिगम परिणामों को संकेतित करते हैं व जिन्हें विद्यार्थियों के साथ साझा करने पर वे कक्षा के कार्यकलापों का केन्द्र बन जाते हैं। ये विद्यार्थियों को अधिगम की अवधारणाओं और कौशलों के साथ उस वक्त भली प्रकार से संलग्न रखते हैं जब शिक्षक उन्हें क्रमशः सफल महारत की ओर ले जाते हैं। कक्षा के कार्यकलापों के दौरान इन उद्देश्यों का जिक्र करते रहने से, शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को, पाठ के हर भाग से धीरे-धीरे गुजरते हुए पूरा पाठ समझ में आने तक होने वाले अधिगम के दौरान उपलब्धियों का लगातार आकलन करने में मदद मिलेगी। वास्तविक योगात्मक आकलन हर सत्र/साल के अन्त में आयोजित किया जाता है जिसका उद्देश्य होता है अधिगम की समग्र गुणवत्ता को स्थापित करना।

रचनात्मक आकलन को "अधिगम के लिए आकलन" कहा जा सकता है क्योंकि उपयोगकर्ता के लिए अपेक्षित मैत्रीपूर्ण अधिगम परिणामों को साझा करने की सहायता से इसका उद्देश्य यह है कि अधिगम के दौरान विद्यार्थियों के अधिगम को सतत रूप से विकसित किया जाए और उनकी उपलब्धियों को बढ़ाया जाए। योगात्मक मूल्यांकन को "अधिगम का आकलन" कहा जा सकता है क्योंकि परीक्षा के प्रश्न भी उन्हीं अपेक्षित परिणामों के लिए सन्दर्भित हैं लेकिन उनका प्रयोजन, अधिगम के पूरा हो जाने के बाद मूल्य या अंक देने के द्वारा, अधिगम की गुणवत्ता को पहचानने और स्थापित करने तक सीमित है।

आगे दी गई तालिका से उपयोगकर्ता के लिए मैत्रीपूर्ण सी.सी.ई. के इन दोनों प्रकार के आकलनों की बारीकियों की समझ गहरी होगी :

अधिगम के लिए आकलन रचनात्मक है, अधिगम के दौरान	**अधिगम का आकलन योगात्मक है,** अधिगम के पूरा होने के बाद
अग्रदर्शी : क्योंकि विद्यार्थी साझा और अपेक्षित परिणामों के लिए अपनी प्रगति का आकलन करते हुए धीरे-धीरे और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं।	पश्चदर्शी : क्योंकि शिक्षक विद्यार्थियों के अधिगम की गुणवत्ता का मूल्यांकन और संक्षेपीकरण उसके पूरा हो जाने के बाद करते हैं।
निरन्तर : क्योंकि शिक्षक और विद्यार्थी लगातार प्रगति का आकलन करते रहते हैं और अवरोधों (यदि हों तो) से निपटते रहते हैं।	चक्रीय : क्योंकि इसे समय-समय पर आयोजित किया जाता है ।
विभिन्नतापूर्ण : क्योंकि विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से और अपनी गति से विकास करते हैं।	सम्मिलित रूप में मिलने वाला क्योंकि टेस्ट व परीक्षाओं में सभी विद्यार्थियों से समान आउटपुट की जरूरत होती है।
अधिगम के दौरान चूँकि शिक्षक के सुगमीकरण के कारण विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन तत्काल हो जाता है; इसलिए विद्यार्थियों को पता होता है कि वे कहाँ हैं, उन्हें कहाँ जाना है और वहाँ कैसे पहुँचना है।	अधिगम का अन्त क्योंकि उपलब्धि की परीक्षा अधिगम के बाद आयोजित की जाती है।
विवरणात्मक : क्योंकि आकलन का तालमेल साझा अधिगम उद्देश्यों के साथ होता है जो यह संकेतित करते हैं कि पाठ का/के उद्देश्य क्या है/हैं और वे कौन-सी अवधारणाएँ और कौशल हैं जिनमें महारत हासिल करनी है।	निर्णयात्मक : क्योंकि यहाँ उद्देश्य अधिगम की गुणवत्ता का मूल्यांकन करना है।
उपचारात्मक : क्योंकि विद्यार्थी पाठ के दौरान अपनी शंकाओं के निवारण या उपलब्धि के मार्ग में आने वाले अवरोधों को दूर करने के लिए लगातार शिक्षक की मदद ले सकते हैं।	गैर-उपचारात्मक : क्योंकि यहाँ उद्देश्य मूल्यांकन है, अधिगम के सुधार के लिए संकेत देना नहीं।
गुणवत्तापरक : क्योंकि शिक्षक और विद्यार्थी निरन्तर अधिगम की गुणवत्ता का निर्णय साझा और अपेक्षित परिणामों के आधार पर कर सकते हैं और उपलब्धि के स्तर को बढ़ाने की दिशा में काम कर सकते हैं।	परिमाणात्मक : क्योंकि इसका सम्बन्ध अंकों व ग्रेडों से है।
शिक्षक+विद्यार्थी : उन्मुख क्योंकि आकलन शिक्षक एवं विद्यार्थियों की कक्षा में होने वाली अनवरत एवं गतिशील अन्त:क्रियात्मकता का परिणाम है।	शिक्षक उन्मुख : क्योंकि मूल्यांकन शिक्षक एवं विद्यार्थियों की अन्त:क्रियात्मकता के बिना ही किया जाता है।

उपयोगकर्ता के लिए मैत्रीपूर्ण आकलन ऐसी कक्षाओं में पनपेगा जिनमें अपना काम करते समय विद्यार्थी प्रश्नों का जवाब

देने की बजाय प्रश्न पूछते हैं और यह समझ पाते हैं कि वे क्या/क्यों सीख रहे हैं। आवश्यकता पड़ने पर तवज्जो और फीडबैक प्राप्त करते हैं और ऐसा करने की प्रक्रिया में अपनी उपलब्धि के स्तर को बढ़ाते हैं। अच्छी सोच और अधिगम को बढ़ावा देने के लिए कुछ बातें जरूरी हैं जैसे-हर पाठ के आरम्भ में शिक्षकों द्वारा अधिगम के उद्देश्यों को साझा करना, पाठ के अन्त में उपलब्धि की जाँच/आकलन करना, नियमित और विवरणात्मक फीडबैक देना, स्वतंत्र अधिगम को प्रोत्साहन देना और विद्यार्थियों की गति और जरूरतों के आधार पर अपने शिक्षण को समायोजित करना। अधिगम के इस निरन्तर रचनात्मक आकलन के बाद अधिगम का नियतकालिक योगात्मक आकलन किया जा सकता है ताकि अधिगम की गुणवत्ता को स्थापित किया जा सके और उसके माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी उपलब्धि का स्तर ऊपर उठाने के लिए प्रेरित किया जा सके।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि किसी भी कार्यनीति की प्रभाविता को जाँचने के लिए हमें यह देखना चाहिए कि मुख्य उपयोगकर्ताओं की मूलभूत जरूरतों के हिसाब से उसका क्या असर हुआ अर्थात अग्निपरीक्षा इस बात की है कि विद्यार्थियों का अधिगम कितनी अच्छी तरह से हो रहा है। यह रॉकेट साइंस नहीं है.....अच्छे शिक्षक हमेशा सहज रूप से यह बात जानते हैं और बिना किसी अनुचित तनाव या प्रतिरोध के वे अपने विद्यार्थियों को अच्छा अधिगम प्राप्त कराने में सफल रहते हैं।

इसलिए, अगर सी.सी.ई.की सही व्याख्या की जाए और उसे सही तरह से लागू किया जाए तो उसे शानदार सफलता मिल सकती है। और तभी यह एक प्रभावी कार्यनीति बन सकती है तथा उस कठोर उच्च दबाव को कम करने में सहायक हो सकती है जो आज भी भारतीय स्कूलों का लक्षण है।

उपयोगकर्ता के लिए मैत्रीपूर्ण सी.सी.ई. तभी सफल होगा जब प्रणालीगत प्रेशर कुकर मद्धम सुर में घुरघुराएगा।

शोभना *अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं। उन्हें भारत और विदेश में स्कूल नेतृत्व के क्षेत्र में अनेक दशकों का अनुभव है। पहले एक प्रधानाचार्य के रूप में उनकी गहरी रुचि इस बात में रही कि कक्षा में विद्यार्थी वास्तव में कैसे सोचते और सीखते हैं और उनके अधिगम के परिणामों का आकलन कैसे किया जाता है। स्कूलों में शैक्षिक/शैक्षणिक नेतृत्वकर्ता के रूप में उन्होंने जिन क्षेत्रों में काम किया उनमें ये काम शामिल हैं–शिक्षकों के साथ काम करके उन तरीकों को समझना जिनसे विद्यार्थी–केन्द्रस्थता बढ़े और इस बात को विकसित करने के लिए प्रभावी शिक्षण–अधिगम–आकलन के अभ्यासों का प्रयोग किया जाए। बाद में उन्होंने स्कूलव्यापी गुणवत्ता गारण्टी कार्यनीतियों पर स्कूलों के एक समूह के साथ काम किया, जिससे उन्हें आत्म–आकलन और जरूरत के आधार पर स्कूल सुधार योजना बनाने में मदद मिले। 2005 में केम्ब्रिज विश्वविद्यालय, यू.के. में फेलोशिप के दौरान "अधिगम के लिए आकलन" में शोभना की रुचि बहुत विकसित हुई, जहाँ उन्होंने काफी विस्तार से इसी दृष्टिकोण के साथ काम किया है। उनसे* shobhana.verghese@azimpremjifoundation.org *पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवाद*** *: नलिनी रावल*